

Padma Shri



SMT. JUMDE YOMGAM GAMLIN

Smt. Jumde Yomgam Gamlin, founder Chairperson of the Mother's Vision (NGO) is an eminent social activist from Arunachal Pradesh.

2. Born on 1st February, 1965, at Akker Yomgam village, West Siang District, Arunachal Pradesh, Smt. Gamlin grew up in a poverty ridden atmosphere. Her father died at a very young age and she had to work as daily waged labor with pay of Rs. 2 per day in order to pursue her formal education. In the year 1980, she joined the Govt. of Arunachal Pradesh as a Gram Sevika. She took voluntary retirement as CDPO (Child Development Project Officer). In her 35 years of govt. service, she has been an instrumental in teaching for women empowerment. Her main focus was to make each woman financially independent and hence through the self help group she introduced livelihood programs in the lives of countless housewives. She shared ideas of making chalk pencils, candles, sewing, embroidering, and many other home based utility products. She herself is very well trained in sewing, knitting, embroidery, handcrafted items etc. She suggested the government to train the gram sevika/supervisor for better innovative ideas and to guide govt. trainers to be more corporative and supportive in the process.

3. In her three decades of journey as govt. employee, Smt. Gamlin developed a deep understanding of different issues faced by people in different places. When she observed a strange behavior change in her son due to addiction, she decided to stand strong and battle it. In 2011, she started creating awareness regarding the ill effects of drugs/addiction in an individual, family and society. She helped rural women/self help groups of Geku circle under Upper Siang to fight against drugs and also promoted cleanliness. She went around villages conducting awareness campaign and also among the self help group regarding the ill effects of drugs, marijuana which was being cultivated by people in that area. By her initiative and with the help of District Administrative, local people, Gaoh Burah and women of self help group destroyed the narcotic plants like marijuana and opium under Geku and Katan circle under Upper Siang Dist.

4. Smt. Gamlin founded an NGO, Mother's Vision more particularly concentrating in the field on de-addiction and hygienic lifestyle. The NGO jointly started to carry out awareness campaigns, orientation sessions, workshops, anonymous counseling etc. all over the district, then throughout the State, as they acknowledged that addiction involves more than the use of drugs and alcohol. The awareness campaigns at schools, community meetings and interactive sessions with youth, etc. became regular activity. In turn, it extended its approach to take care of the recovering addicts. During these sessions they are counseled besides provided indoor gaming facilities, in the meantime, escorting misguided youths to rehabilitation centers across the country also continues. The escorting part covered a huge number of youths. Later she decided to establish a De-addiction -cum- Rehabilitation center on a self help basis. A De-addiction cum Rehabilitation Center has been set up with capacity to provide treatment to 30 inmates at one time. The infrastructure was developed all on self help basis and contribution within the members of NGO itself.

5. As on date, the Mother's Vision has multiple units as the nearest help to people. The members are regularly given training on coping skills, methods to deal with the addicts, how to conduct public meetings, school presentations and community interactions. The network is indeed effective and connects people. However, the Mother's Vision works in silence. The members are restricted from sharing its activities on social sites and open platforms. The Governor of the State also funded her to carry out the mission to a larger extent. Lately, she has also started working for HIV/ AIDS patients, female sex workers, IDUS, TB patients, Transgender and MSM, etc.



श्रीमती जुड़े योमगम गामलिन

मदर्स विजन (एनजीओ) की संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती जुड़े योमगम गामलिन अरुणाचल प्रदेश की प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. 1 फरवरी, 1965 को अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम सियांग जिले के अक्कर योमगम गांव में जन्मी, श्रीमती गामलिन गरीबी से ग्रस्त माहौल में पली-बढ़ीं। उनके पिता की बहुत कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी और उन्हें अपनी औपचारिक शिक्षा जारी रखने के लिए 2 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करना पड़ा। वर्ष 1980 में, वह अरुणाचल प्रदेश सरकार में ग्राम सेविका के रूप में शामिल हुईं। उन्होंने सीडीपीओ (बाल विकास परियोजना अधिकारी) के रूप में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। अपनी 35 वर्षों की सरकारी सेवा में, उन्होंने महिला सशक्तीकरण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक महिला को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना था और इसलिए स्वयं सहायता समूह के माध्यम से उन्होंने असंख्य गृहिणियों के लिए आजीविका कार्यक्रम शुरू किए। उन्होंने चाक पेंसिल, मोमबत्तियाँ, सिलाई, कढ़ाई और कई अन्य घरेलू उपयोगी उत्पाद बनाने के विचार साझा किए। वह स्वयं सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, दस्तकारी की वस्तुओं आदि में सुप्रशिक्षित हैं। उन्होंने सरकार को बेहतर नवीन विचारों के लिए ग्राम सेविका/पर्यवेक्षक को प्रशिक्षित करने और सरकारी प्रशिक्षकों को इस प्रक्रिया में अधिक सहयोगी और सहायक बनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने का सुझाव दिया।

3. सरकारी कर्मचारी के रूप में अपने तीन दशकों के कार्यकाल में श्रीमती गामलिन ने अलग-अलग जगहों पर लोगों के विभिन्न मुद्दों की गहरी समझ विकसित की। जब उन्होंने नशे की लत के कारण अपने बेटे के व्यवहार में एक अजीब बदलाव देखा, तो उन्होंने साहसपूर्वक इसका सामना करने और इससे लड़ने का फैसला किया। वर्ष 2011 में, उन्होंने व्यक्ति, परिवार और समाज में ड्रग्स/लत के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना शुरू किया। उन्होंने ऊपरी सियांग के अंतर्गत गेकू सर्कल की ग्रामीण महिलाओं/स्वयं सहायता समूहों को ड्रग्स के खिलाफ लड़ने में मदद की और स्वच्छता को भी बढ़ावा दिया। वह जागरूकता अभियान चलाने के लिए गांवों में गईं और स्वयं सहायता समूह के बीच भी ड्रग्स और उस क्षेत्र में लोगों द्वारा उगाए जा रहे मारिजुआना के दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उनकी पहल और जिला प्रशासन की मदद से, स्थानीय लोगों, गाँव बूढ़ा और स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने ऊपरी सियांग जिले के अधीन गेकू और कटान सर्कल के तहत मारिजुआना और अफीम जैसे मादक पौधों को नष्ट कर दिया।

4. श्रीमती गामलिन ने गैर सरकारी संगठन मदर्स विजन की स्थापना की, जो विशेष रूप से नशे की लत छुड़ाने और स्वच्छ जीवनशैली के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इस गैर सरकारी संगठन ने संयुक्त रूप से पूरे जिले में और फिर पूरे राज्य में जागरूकता अभियान, अभिप्रेत सत्र, कार्यशालाएं, अज्ञात रूप से परामर्श आदि शुरू किए, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि नशे की लत सिर्फ नशीली दवाओं और शराब के सेवन तक ही सीमित नहीं है। विद्यालयों में जागरूकता अभियान, सामुदायिक बैठक और युवाओं के साथ संवाद सत्र आदि नियमित गतिविधि बन गए। इससे नशे की लत से उबरने वालों की देखभाल करने के दृष्टिकोण में विस्तार हुआ। इन सत्रों के दौरान उन्हें परामर्श दिया जाता है और इनडोर गेमिंग की सुविधा प्रदान की जाती है, साथ ही साथ देश भर के पुनर्वास केंद्रों में गुमराह युवाओं को ले जाना भी जारी रहता है। अनुरक्षण प्रक्रिया में बड़ी संख्या में युवा शामिल थे। बाद में उन्होंने स्वयं सहायता के आधार पर एक नशा मुक्ति-सह-पुनर्वास केंद्र स्थापित करने का फैसला किया जिसमें एक बार में 30 मरीजों का इलाज हो सकता है। अवसंरचना को स्वयं सहायता के आधार पर और गैर सरकारी संगठन के सदस्यों के योगदान से विकसित किया गया था।

5. वर्तमान में, लोगों की सबसे नजदीकी मदद के लिए मदर्स विजन की कई इकाइयाँ काम कर रही हैं। सदस्यों को नशे के आदी लोगों से व्यवहार करने के कौशल, तरीके, सार्वजनिक बैठक, स्कूल प्रस्तुतियाँ और सामुदायिक संवाद के आयोजन के तौर-तरीकों पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है। यह नेटवर्क वास्तव में प्रभावी है और लोगों को जोड़ता है। हालाँकि, मदर्स विजन बिना प्रचार के अपना काम करता है। सदस्यों को सोशल साइट और खुले प्लेटफॉर्म पर इसकी गतिविधियों को साझा करने से मना किया गया है। राज्य के राज्यपाल ने भी मिशन को व्यापक तौर पर आगे बढ़ाने के लिए वित्त पोषित किया। हाल ही में, उन्होंने एचआईवी/एड्स रोगियों, महिला यौनकर्मियों, आईडीयूएस, टीबी रोगियों, ट्रांसजेंडर और एमएसएम आदि के लिए भी काम करना शुरू कर दिया है।